कक्षा 10 के छात्र/छात्राओं में सीखने की कठिनाइयों (Learning difficulties) को दूर करने हेतु

प्रेरणा

Revision Notes

इतिहास

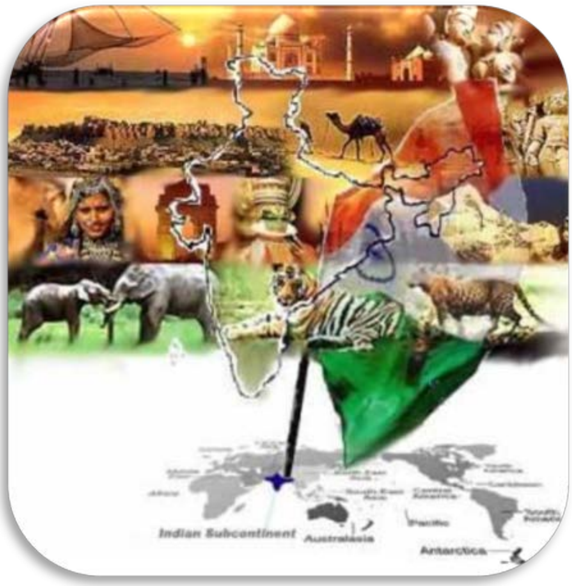

राज्य शिक्षा–शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, पटना द्वारा विकसित

विषय–सूची

अध्याय 1	यूरोप में राष्ट्रवाद
अध्याय 2	समाजवाद एवं साम्यवाद
अध्याय 3	हिन्द चीन में राष्ट्रवादी आन्दोलन
अध्याय 4	भारत में राष्ट्रवाद
अध्याय 5	अर्थव्यवस्था और आजीविका
अध्याय 6	शहरीकरण एवं शहरी जीवन
अध्याय 7	व्यापार और भूमंडलीकरण
अध्याय 8	प्रेस–संस्कृति एवं राष्ट्रवाद

◆◆◆

अध्याय–1

यूरोप में राष्ट्रवाद

राष्ट्रवाद

राष्ट्रवाद आधुनिक युग की राजनैतिक चेतना का परिणाम है जो एक विशेष भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक परिवेश में विकसित होती है। यूरोप में राष्ट्रवादी चेतना की शुरूआत फ्रांस से होती है।

राष्ट्रवाद के विकास में सहायक तत्व

1. पुनर्जागरण के परिणामस्वरूप उत्पन्न परिस्थितियाँ
2. फ्रांसीसी क्रांति के आदर्श
3. नेपोलियन का सैन्य अभियान एवं प्रशासनिक व्यवस्था
4. मध्यम वर्ग का उदय एवं उदारवादी सोच
5. तत्कालीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश
6. मेटरनिख की प्रतिक्रियावादी नीति ।

राष्ट्रवादी चेतना का परिणाम

क्र.	क्रांति	कारण	परिणाम
1.	1830 की जुलाई क्रांति	• मेटरनिख की प्रतिक्रियावादी नीति • चार्ल्स दशम् एवं पोलिग्नेक का निरंकुश शासन • उदारवादियों द्वारा अभिजात्यवर्गीय व्यवस्था का विरोध	• लुई फिलिप शासक बना और चार्ल्स–X इंगलैंड पलायन किया। • उदारवादी एवं संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना। • मेटरनिख व्यवस्था को चुनौती • राजशाही एवं चर्च के प्रभाव को चुनौती।
2.	1848 की क्रांति	• लूई फिलिप की कमजोर एवं उदारवादी नीति • असफल वैदेशिक नीति • भुखमरी एवं बेरोजगारी	• पुरातन व्यवस्था का अंत एवं द्वितीय गणराज्य की स्थापना • नेपोलियन III फ्रांस का सम्राट बना • इटली एवं जर्मनी के एकीकरण की प्रक्रिया का प्रारंभ।

इटली का एकीकरण

एकीकरण का बाधक तत्व

(i) विषम भौगोलिक परिस्थिति
(ii) पड़ोसी देशों का हस्तक्षेप (ऑस्ट्रिया, फ्रांस आदि)
(iii) पोप का प्रभाव

एकीकरण में सहायक तत्व

(i) राष्ट्रवादी विचार धारा का प्रभाव
(ii) फ्रांस की घटनाओं का प्रभाव
(iii) नेपोलियन का सैन्य अभियान
(iv) मेटरनिख की प्रतिक्रियावादी सोच एवं नागरिक आन्दोलन
(v) मेजनी, काउण्ट काबूर और गैरीवाल्डी का योगदान

एकीकरण की प्रक्रिया

मेजिनी का योगदान

- यंग इटली (1831) की स्थापना
- यंग यूरोप (1834) की स्थापना
- 1848 की क्रांति के बाद पुनः वापसी एवं जनवादी आन्दोलन की शुरूआत
- ऑस्ट्रिया द्वारा सार्डीनिया पिडमौण्ड के शासक एलवर्ट की पराजय के बाद पुनः पलायन

काउण्ट काबूर

- विक्टर इमैनुएल का प्रधानमंत्री बना
- 1853–54 के क्रिमिया युद्ध में फ्रांस का कुटनीतिक रूप से सहयोग
- नीस और सेवाय को नेपोलियन III को देने का वादा किया
- 1859–60 में लोम्बार्ड़ी पर अधिकार लेकिन फ्रास के विरोध के कारण वेनेसिया ऑस्ट्रिया के ही कब्जे में
- 1860–61 में परमा, मोडेना, टस्कनी पर अधिकार

गैरीवाल्डी

पेशे से नाविक और मेजिनी के विचारों का समर्थक आगे चलकर काबूर के प्रभाव में संवैधानिक राजतंत्र का पक्षधर बना।

- सिसली और नेपल्स पर अधिकार किया और विक्टर इमैनुएल द्वितीय का प्रतिनिधि शासक बना।
- 1862 में रोम पर आक्रमण की योजना बनाई लेकिन काबूर से मुलाकात के बाद योजना का परित्याग।
- इटली के दक्षिण क्षेत्र के शासक बनने का प्रस्ताव खारिज किया एवं अपनी संपत्ति राष्ट्र को समर्पित कर साधारण किसान का जीवन व्यतीत किया।

एकीकरण का अंतिम चरण

- 1862 में काबूर की मृत्यु के बाद रोम और वेनिशिया पर विक्टर इमैनुएल ने स्वयं अधिकार किया। 1870–71 के फ्रांस और प्रशा के बीच युद्ध से उपजी अनुकूल परिस्थिति के कारण पोप बेटिकन सिटी के राजमहल में सिमट गया और संपूर्ण रोम पर इटली का अधिकार हो गया । इस तरह इटली का एकीकरण पूरा हुआ।

जर्मनी का एकीकरण

एकीकरण का बाधक तत्व

(i) भौगोलिक रूप से लगभग 300 ईकाईयों में विभाजित

(ii) उत्तरी जर्मनी प्रोटेस्टेट एवं दक्षिणी जर्मनी कैथोलिक बाहुल्य

(iii) राष्ट्रवाद के प्रारंभिक भावना का अभाव

एकीकरण में सहायक तत्व

(i) नेपोलियन का सैन्य अभियान एव राइन राज्य संघ की स्थापना

(ii) बुद्धिजीवियों यथा–हीगेल, काण्ट, हम्बोल्ट आदि की राष्ट्रवादी विचार धारा का प्रभाव

(iii) शिक्षक–छात्र संगठन ब्रूशन शैफ्ट, मेटरनिख का दमनकारी कानून–कार्ल्सवाद एवं व्यापारियों की संस्था जालवेरिन का योगदान

(iv) विलियम एवं बिस्मार्क का अविर्भाव

बिस्मार्क एवं जर्मनी का एकीकरण

- जर्मन डायट में प्रशा का प्रतिनिधि एवं निरकुश राजतंत्र का समर्थक।
- सैन्य शक्ति के महत्व को समझते हुए ‘लौह एवं रक्त’ की नीति को अपनाया।
- 1864 में ऑस्ट्रिया के साथ मिलकर डेनमार्क को पराजित किया।

- श्लेशविग पर जर्मन अधिकार एवं जर्मन बाहुल्य होलस्टिन पर ऑस्ट्रिया का प्रभुत्व माना। यह उसकी कुटनीतिक चाल रही।
- होलस्टिन की जर्मन आबादी को भड़का कर ऑस्ट्रिया के विरूद्ध युद्ध के माहौल का निर्माण किया।
- 1866 के सेडोवा के युद्ध में आस्ट्रिया की पराजय तथा प्रशा से ऑस्ट्रिया का प्रभुत्व। समाप्त। दक्षिण जर्मन राज्यों में हस्तक्षेप एवं स्पेन की राजगद्दी के सवाल पर फ्रांस से युद्ध के माहौल का निर्माण।
- नेपोलियन III द्वारा 19 जून 1870 को प्रशा पर आक्रमण लेकिन सेडान के युद्ध में फ्रांस की पराजय।
- 18 मई 1871 को फ्रांस के साथ ' फ्रैंकफर्ट' की संधि के बाद जर्मनी के एकीकरण का कार्य पूर्ण।

अन्य देशों में राष्ट्रीय आन्दोलन

यूनान

तुर्की प्रभुत्व के विरूद्ध राष्ट्रवादी भावना के उदय एवं इंगलैण्ड, फ्रांस एवं रूस के सहयोग से 1832 में यूनान का स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उदय। (एड्रियानोपल की संधि–1829) ।

हंगरी

ऑस्ट्रिया के प्रभाव के विरूद्ध कोसुथ और फ्रॅसिस डिक नामक क्रांतिकारियों द्वारा लोकतांत्रिक आन्दोलन। 1846 को ऑस्ट्रिया की सरकार द्वारा हंगरी में स्वतंत्र मंत्री परिषद की मांग स्वीकार्य। प्रतिनिधि सभा का राजधानी बुडापेस्ट में प्रतिवर्ष सम्मेलन को मान्यता एवं हंगरी के राष्ट्रीय स्मिता को महत्व।

पोलैंड

पोलैंड में राष्ट्रवादी आन्दोलन को रूस के द्वारा दमन कर दिया गया।

बोहेमिया

बोहेमिया में राष्ट्रवादी आन्दोलन को आस्ट्रिया के द्वारा दमन कर दिया गया।

◆◆◆

अध्याय–2

समाजवाद एवं साम्यवाद

समाजवाद

समाजवाद का पहला प्रयोग 1827 में हुआ । इसका उद्देश्य है– सामाजिक और आर्थिक समानता। समाजवादी का मानना है कि उत्पादन निजी लाभ के लिए न होकर समस्त समाज के लिए हो । इसमें उत्पादन के साधनों एवं पूँजी पर राज्य का नियंत्रण होता है।

<table>
<tr><th colspan="2">समाजवाद</th></tr>
<tr><td>स्वप्नदर्शी समाजवाद/यूरोपियन समाजवाद या कार्ल मार्क्स के पहले का समाजवाद।</td><td>साम्यवाद /वैज्ञानिक समाजवाद</td></tr>
<tr><td>प्रमुख चिंतक– सेंट साइमन, चार्ल्स फुरिए, लूई ब्लाँ, राबर्ट ओवेन वर्ग समन्वय की बात करते हैं।
इंगलैंड में समाजवाद का जनक– रावर्ट ओबेन।</td><td>प्रतिपादक–चिंतक–कार्ल मार्क्स (1818–1883)
जन्म – जर्मनी में
पिता – हेनरिक
प्रभाव – रूसो, मांटेस्क्यू, हीगेल का
मार्क्स और एंगेल्स ने मिलकर 1848 में कम्यूनिस्ट मेनिफेस्टो प्रकाशित किया।
पुस्तक – दास कैपिटल
कथन – ''श्रमिकों को सिवाय उनकी बेड़ियों के, कुछ भी खोने के लिए नहीं है। दुनिया के श्रमिकों एक हों।''
मान्यता – मानव इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है।
इतिहास की आर्थिक व्याख्या की ।
ऐतिहासिक प्रक्रिया के अंत में वर्गविहीन समाज की स्थापना होगी और राज्य विलुप्त हो जायेगा।</td></tr>
</table>

मार्क्सवाद का प्रसार

- लंदन में 1864 में मार्क्स के प्रयास से प्रथम इंटरनेशनल की स्थापना हुई। इस सम्मेलन में नारा दिया गया – ''अधिकार के बिना कर्त्तव्य नहीं और कर्त्तव्य के बिना अधिकार नहीं''।
- द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय संघ– 1889 में पेरिस में। इसी सम्मेलन में 1 मई को मजदूर दिवस घोषित किया गया।

रूस की क्रान्ति (दो क्रांतियाँ हुईं)

1905 की क्रान्ति : जारशाही का अंत नहीं हुआ ।

1917 की क्रान्ति

(क) फरवरी क्रान्ति (मेंशेविक क्रांति)। परिणाम स्वरूप–जारशाही का अंत हुआ ।

(ख) अक्टूबर क्रान्ति/बोल्शेविक क्रान्ति। परिणाम स्वरूप–सत्ता बोल्शेविकों के हाथों में आई ।

1917 की बोल्शेविक क्रान्ति के कारण

राजनीति कारण	• निरंकुश एवं अत्याचारी शासन • रूसीकरण की नीति • राजनीतिक दलों का उदय • नागरिक एवं राजनीतिक स्वतंत्रता का अभाव • 1905 की क्रान्ति का प्रभाव (9 जनवरी खूनी रविवार/लाल रविवार) • प्रथम विश्वयुद्ध में रूस की पराजय • जार निकोलस II और जारीना की भूमिका (क्रान्ति के समय जार निकोलस II ही जार था। जारीना एक बदनाम पादरी रासपुटीन के प्रभाव में थी)।
समाजिक कारण	• किसानों, मजदूरों की दयनीय स्थिति एवं उनका विद्रोह • सुधार आन्दोलन
धार्मिक कारण	धार्मिक स्वतंत्रता की कमी
आर्थिक कारण	• दुर्बल आर्थिक स्थिति • औद्योगिकीकरण की समस्या
बौद्धिक कारण	• रूस में बौद्धिक जागरण • वार एण्ड पीस – टॉल्सटाय • फादर्स एण्ड सन्स – तुर्गनेव • माँ – मैक्सिम गोर्की

बोल्शेविक क्रान्ति का महत्व

विश्व की प्रथम सर्वहारा वर्ग की क्रान्ति–प्रथम साम्यवादी सरकार की रूस में स्थापना क्रान्ति के परिणाम :

रूस पर प्रभाव	विश्व पर प्रभाव
• स्वेच्छाचारी जारशाही का अंत • सर्वहारा वर्ग के अधिनायक की स्थापना • नई प्रशासनिक व्यवस्था की स्थापना • नई सामाजिक आर्थिक व्यवस्था • धर्म निरपेक्ष राज्य की स्थापना • रूसीकरण की नीति का परित्याग	• पूजीवादी राष्ट्रों में आर्थिक सुधार का प्रयास • सर्वहारा वर्ग के सम्मान में वृद्धि • साम्यवादी सरकारों की स्थापना • अन्तर्राष्ट्रवाद को प्रोत्साहन • साम्राज्यवाद के पतन की प्रक्रिया तेज • नया शक्ति संतुलन

लेनिन

पूरा नाम : व्लादिमीर इवानोविच लेनिन,

जन्म : 10 अप्रैल 1870 को सिमब्रस्क गाँव में – बोल्शेविक क्रांति के प्रणेता।

ट्राटस्की के सहयोग से करेन्सकी की सरकार का तख्ता पलट दिया। करेन्सकी मेन्शेविक दल का नेता था। अप्रैल थीसिस में लेनिन के बोल्शेविक दल के उद्धेश्य और कार्यक्रम निर्दिष्ट किए गए जिनमें भूमि, शान्ति और रोटी की व्यवस्था करना प्रमुख था।

लेनिन के कार्य – आन्तरिक व्यवस्था

1. युद्ध की समाप्ति – रूस और जर्मनी के बीच 1918 में ब्रेस्टलिटोव्स्क की संधि।
2. प्रति–क्रान्ति का दमन – लेनिन ने चेका नामक पुलिस दस्ता का गठन कियां।
3. आर्थिक व्यवस्था – नई आर्थिक नीति 1921 में लेनिन ने लागू की।
4. सामाजिक सुधार
5. प्रशासनिक सुधार
6. नए संविधान का निर्माण– इसके अनुसार रूस को 'रूसी सोशलिस्ट फेडरल सोवियत रिपब्लिक' घोषित किया गया। बाद में रूस सोवियत संघ बना।

लेनिन की विदेश नीति

1. गुप्त संधियों की समाप्ति
2. राष्ट्रीयता का सिद्धान्त
3. साम्राज्यवाद–विरोधी नीति
4. कॉमिण्टर्न की स्थापना (सभी देशों की साम्यवादी पार्टियों का एक संघ)

लेनिन के बाद रूस

स्टालिन ने रूस की आर्थिक प्रगति के लिए प्रयास किए। साथ ही उसने सर्वाधिकारवाद की स्थापना भी की। स्टालिन ने 1929 से किसानों को सामूहिक कृषि फार्म (कोलखोज) में खेती करनेको बाध्य किया। स्टालिन की मृत्यु 1953 में हो गई।

खुश्चेव और गोर्वाचोव की उदारीकरण की नीति – गोर्वाचोव के ग्लासनोस्त (खुलापन) और पेरेस्त्रोइका (पुनर्गठन) की नीतियों का सोवियत संघ पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। दिसम्बर 1991 में सोवियत संघ का विघटन हो गया।

नई आर्थिक नीति की प्रमुख बातें निम्नलिखित हैं

1. किसानों से अनाज ले लेने के स्थान पर एक निश्चित कर लगाया गया। बचा हुआ अनाज किसान का था और वह इसका मनचाहा इस्तेमाल कर सकता था।
2. सिद्धान्त में जमीन राज्य की थी फिर भी व्यवहार में जमीन किसान की हो गई।
3. 20 से कम कर्मचारियों वाले उद्योगों को व्यक्तिगत रूप से चलाने का अधिकार मिल गया।
4. उद्योंगों का वर्गीकरण कर दिया गया। निर्णय और क्रियान्वयन के बारे में विभिन्न इकाइयों को काफी छूट दी गई।
5. व्यक्तिगत संपत्ति और जीवन की बीमा भी राजकीय एजेन्सी द्वारा शुरू किया गया।
6. विदेशी पूँजी भी सीमित तौर पर आमंत्रित की गई।
7. विभिन्न स्तरों पर बैंक खोले गए।
8. ट्रेड यूनियन की अनिवार्य सदस्यता समाप्त कर दी गई। हालाँकि लेनिन की इस नीति की आलोचना की जाती है लेकिन लेनिन ने इसका जवाब देते हुए कहा कि तीन कदम आगे बढ़कर एक कदम पीछे हटना–फिर भी दो कदम आगे रहने के समान है।

◆◆◆

अध्याय–3

हिंद–चीन में राष्ट्रवादी आन्दोलन

मुख्य बातें :

- आज के वियतनाम, लाओस और कंबोडिया के क्षेत्र हिंद–चीन के अन्तर्गत आते हैं।
- इस देश के कुछ देशों पर चीन और कुछ पर हिन्दुस्तान का सांस्कृतिक प्रभाव था।
- चौथी शताब्दी में भारतवंशी शासक ने कंबूज राज्य की स्थापना की थी।
- 12वीं शताब्दी में राजा सूर्यवर्मा द्वितीय ने कंबोडिया में अंकोरवाट मंदिर का निर्माण करवाया था।

व्यापारिक कंपनियों का आगमन और फ्रांसीसी प्रभुत्व :

- सर्वप्रथम पुर्त्तगाली व्यापारियों ने 1510 ई0 में मलक्का को व्यापारिक केन्द्र बनाकर हिंद–चीन देशों के साथ व्यापार प्रारंभ किया ।
- पुर्त्तगाल के बाद स्पेन, डच, इंगलैंड और फ्रांसीसियों का आगमन हुआ।
- 20वीं शताब्दी के आरंभ तक सम्पूर्ण हिंद–चीन फ्रांस की अधीनता में आ गया ।
- हिंद–चीन में बसने वाले फ्रांसीसी **"कोलोन"** कहे जाते थे।

फ्रांस द्वारा हिंद–चीन में उपनिवेश स्थापना के उद्धेश्य :

- भारत में फ्रांसीसियों की शक्ति कमजोर हो रही थी। चीन में उनकी प्रतिद्वन्द्विता मुख्य रूप से इंगलैंड से थी। अतः हिंद–चीन में अपनी उपस्थिति मजबूत करना चाहते थे। अपने देश के औद्योगीकरण के लिए कच्चे माल की आपूर्त्ति एवं उत्पादित वस्तुओं के लिए बाजार की आवश्यकता थी।
- 17वीं शताब्दी में बहुत से फ्रांसीसी व्यापारी हिंद–चीन में पहुँच चुके थे। फ्रांसीसी सेना ने पहली बार 1858 ई0 में वियतनाम में प्रवेश किया। धीरे–धीरे अस्सी के दशक के मध्य तक उन्होंने देश के उत्तरी इलाके पर अपना कब्जा जमा लिया। फ्रांस–चीन युद्ध के बाद उन्होंने टोंकिन एवं अनाम पर भी कब्जा जमा लिया। इस प्रकार 20वीं शताब्दी के आरंभ तक पूरा हिंद–चीन फ्रांस के अधीन में आ गया।
- अपने उद्धेश्यों की प्राप्ति के लिए फ्रांसीसियों ने सर्वप्रथम व्यापारिक नगरों, बंदरगाहों, किसानों एवं मजदूरों का शोषण करना शुरू किया। शोषण के साथ–साथ फ्रांसीसियों ने वहाँ के विकास के लिए कई सकारात्मक कदम उठाए :–
  - (i) कृषि की उत्पादकता बढ़ाने के लिए नहरों का एवं जल–निकासी का समुचित प्रबंध किए।
  - (ii) दलदली भूमि, जंगलों आदि में कृषि क्षेत्र को बढ़ावा दिया जाने लगा।

(iii) इन प्रयासों के फलस्वरूप 1931 ई0 तक वियतनाम विश्व का तीसरा बड़ा चावल निर्यातक देश बन गया।

- रबड़ बगानों, फर्मों एवं खानों में मजदूरों से **एकतरफा अनुबंध व्यवस्था** पर काम लिया जाता था। इस व्यवस्था के अंतर्गत मजदूरों को कोई अधिकार नहीं था, जबकि मालिक को असीमित अधिकार प्राप्त था।

हिन्द–चीन में राष्ट्रीयता का विकास

- फ्रांसीसियों और उनके वर्चस्व के विरूद्ध पूरे हिंद–चीन के लोगों ने जमकर संघर्ष किया और यहीं से हिंद–चीन में राष्ट्रीयता की भावना बलवती होने लगी।
- इसी सिलसिले में 1903 ई0 **फान–बाई–चाउ ने दुई–तान–होई** नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की, जिसके नेता कुआंग–दें थे।
- **फान–बाई–चाउ** ने **हिस्ट्री ऑफ लॉस ऑफ वियतनाम** की रचना कर राष्ट्रवादी चेतना को विकसित करने में मदद की।
- 1971 ई0 में **न्यूगन–आई–क्योक (हो–ची–मिन्ह)** नामक एक वियतनामी छात्र ने साम्यवादियों का एक गुट बनाया। 1952 ई0 में इन्होंने **वियतनामी क्रांतिकारी** दल का गठन किया । 1930 ई0 में वियतनाम के बिखरे राष्ट्रवादी गुटों को एकजूट कर **वियतनाम कांग–सान–देंग अर्थात वियतनाम कम्युनिस्ट पार्टी** की स्थापना की।
- **जोन्गुएन–आई** ने **अनामी दल** की स्थापना की थी।
- **हो–ची–मिन्ह मार्ग**–यह मार्ग हनोई से चलकर लाओस, कंबोडिया के सीमा से गुजरता हुआ दक्षिणी वियतनाम तक जाता था, जिससे सैकड़ों कच्ची–पक्की सड़के जुड़ी थी।

द्वितीय विश्व युद्ध और वियतनामी स्वतंत्रता

- द्वितीय विश्व युद्ध के समय हिंद–चीन में एक तरह का द्वैध शासन था, जिसमें सत्ता जापानियों के हाथ थी एवं प्रशासनिक व्यवस्था फ्रांसीसियों के जिम्मे। इसके विरूद्ध हो–ची–मिन्ह के नेतृत्व में देश भर के राष्ट्रवादियों ने वियतमिन्ह (वियतनाम स्वतंत्रता लीग) की स्थापना कर छापामार युद्ध नीति का सहारा लिया।
- अंततः वियतनाम के राष्ट्रवादियों ने वियतमिन्ह के नेतृत्व में लोकतंत्रीय गणराज्य सरकार की स्थापना 2 सितम्बर 1945 ई0 को करते हुए, वियतनाम की स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। इस सरकार का प्रधान हो–ची–मिन्ह बनाए गए।
- वियतनाम की स्वतंत्रता के समय अन्नाम का शासक (राजा) बाओदाई था।
- 6 मार्च 1946 को फ्रांस एवं वियतनाम के बीच **हनोई समझौता** हुआ, जिसके तहत फ्रांस ने वियतनाम को गणराज्य के रूप में एक स्वतंत्र इकाई माना।

- 1950 ई0 में हिंद–चीन की स्थिति पुनः जटिल हो गई। इसी क्रम में दिएन–विएन–फू पर गुरिल्ला सैनिकों ने आक्रमण किया, जिसमें फ्रांस बुरी तरह पराजित हुआ ।
- हिंद–चीन में बढ़ रहे साम्यवादी विचारों को रोकने एवं दमन करने के लिए अमेरिका ने वहां हस्तक्षेप करना प्रारंभ किया।
- मई 1954 ई0 में जेनेवा में हिंद–चीन समस्या पर वार्त्ता हेतु सम्मेलन बुलाया गया, जिसे **जेनेवा समझौता** कहा जाता है। यह समझौता रूस और अमेरिका के बीच हुआ, जिसके तहत पूरे वियतनाम को दो भागों में बाँट दिया गया।
- **होआ–होआ आन्दोलन** – यह एक बौद्धिक–धार्मिक क्रांतिकारी आन्दोलन था, जो 1939 ई0 में प्रारंभ हुआ था। इस आन्दोलन के नेता हुइन्ह–फू–सो था । इस आन्दोलन के अनुयायी क्रांतिकारी उग्रवादी घटनाओं को अंजाम देते थे।
- 1964 ई0 में स्वतंत्र राज्य बनने के बाद कंबोडिया ने संवैधानिक राजतंत्र को स्वीकार किया। नरोत्तम सिंहानुक वहाँ के शासक बने, जिन्हें लगातार अमेरिका से संघर्ष करना पड़ा।
- 1978 ई0 में नरोत्तम सिंहानुक के सक्रिय राजनीति से सन्यास लेने के बाद कंबोडिया का नाम **कम्पूचिया** कर दिया गया।
- जेनेवा समझौता के फलस्वरूप उत्तरी वियतनाम में साम्यवादी सरकार थी और दक्षिणी वियतनाम पूँजीवादी सरकार थी। 5 अगस्त 1964 ई0 को अमेरिका ने उत्तरी वियतनाम पर आक्रमण किया। इस युद्ध में अमेरिका ने रासायनिक हथियारों–नापाम, ऑरेंज एजेंट एवं फास्फोरस बमों का इस्तेमाल किया।
- **नापाम –** यह एक तरह का रासायनिक ऑर्गेनिक कम्पाउंड है जो अग्निबमों में गैसोलिन के साथ मिलकर एक मिश्रण तैयार करता था जो त्वचा से चिपक जाता और जलता रहता था।
- **एजेंट ऑरेंज –** यह एक ऐसा जहर था जिससे पेड़ों की पत्तियाँ तुरंत झुलस जाती थी एवं पेड़ मर जाता था । जंगलों को खत्म करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता था । इसका नाम ऑरेंज पट्टियों वाले ड्रमों में रखे जाने के कारण पड़ा। अमेरिका इनका उपयोग जंगलों के साथ खेतों और आबादी दोनों पर जमकर किया।

माई–ली गाँव की घटनाः

यह दक्षिण वियतनाम के एक गाँव था, जहाँ के लोगों को वियतकांग समर्थक मान अमेरिकी सेना ने पूरे गाँव को घेर कर पुरूषों को मार डाला, औरतों–बच्चियों को बंधक बनाकर कई दिनों तक सामूहिक बलात्कार किया, फिर उन्हें भी मार कर पूरे गाँव में आग लगा दिया । लाशों के बीच दबा एक बूढ़ा जिंदा बच गया था, जिसने इस घटना को उजागर किया।

- माई–ली गाँव की घटना के बाद अमेरिकी सेना की आलोचना पूरे विश्व में होने लगी। प्रसिद्ध दार्शनिक रसेल ने एक अदालत लगाकर अमेरिका को वियतनाम युद्ध के लिए दोषी करार दे दिया। अमेरिका पर वियतनाम समस्या के समाधान के लिए अन्तर्राष्ट्रीय दबाव बढ़ता जा रहा था। तात्कालिक राष्ट्रपति निक्सन ने वियतनाम में शांति के लिए पाँच सूत्री योजना की घोषणा की–

1. हिंद–चीन की सभी सेनाएँ युद्ध बंद कर यथास्थान पर रहें ।
2. युद्ध विराम को देख–रेख अन्तर्राष्ट्रीय पर्यवेक्षक करेंगे ।
3. इस दौरान कोई देश अपनी शक्ति बढ़ाने का प्रयत्न नहीं करेगा।
4. युद्ध विराम के दौरान सभी तरह की लड़ाईयाँ बंद रहेगी।
5. युद्ध विराम का अंतिम लक्ष्य समूचे हिंद–चीन में संघर्ष का अंत होगा।

- अंततः 27 फरवरी 1973 ई0 को पेरिस में वियतनाम युद्ध के समाप्ति के समझौते पर हस्ताक्षर हो गया, समझौते की मुख्य बातें थी– युद्ध समाप्ति के 60 दिनों के अन्दर अमेरिकी सेना वापस हो जाएगी, उत्तर एवं दक्षिण वियतनाम परस्पर सलाह करके एकीकरण का मार्ग खोजेंगे।
- इस प्रकार अमेरिका के साथ चला आ रहा युद्ध समाप्त हो गया एवं अप्रैल 1975 ई0 में उत्तरी एवं दक्षिणी वियतनाम का एकीकरण हो गया।

◆◆◆

अध्याय–4

भारत में राष्ट्रवाद

राष्ट्रवाद एक भावना है जो किसी विशेष भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक वातावरण में रहने वाले लोगों के बीच प्रेम एवं एकता का संचार करती है।

राष्ट्रवाद के उदय के कारण

लार्ड लिटन की नीति

- 1878 का वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट जिससे देशी प्रेस पर दंडात्मक कारर्वाई।
- 1879 का आर्म्स एक्ट।

लार्ड रिपन की नीति

- 1883 का इल्बर्ट बिल का यूरोपीयों द्वारा विरोध जिसके माध्यम से फौजदारी मुकदमों की सुनवाई भारतीय न्यायधीश कर सकते थे।

लार्ड कर्जन की नीति

- 1899 में कलकत्ता कॉरपोरेशन एक्ट जिससे नगरपालिका में गैर निर्वाचित सदस्यों की संख्या में वृद्धि।
- 1904 का विश्वविद्यालय अधिनियम।
- 1905 में बंगाल विभाजन जिसका उद्धेश्य हिन्दू–मुस्लिम एकता को तोड़ना था । विभाजन 16 अक्टूबर 1905 को लागू एवं 1911 में रद्द।

लार्ड डलहौजी का संरचनात्मक प्रयास– रेलवे, टेलीग्राफ, व्यवस्थित परिवहन जिससे दूरियाँ कम होने लगी एवं वैचारिक आदान–प्रदान होने लगे।

आर्थिक कारण

- भारत से कच्चे माल का निर्यात।
- भारत में निर्मित वस्तुओं के निर्यात पर प्रतिबंध एवं आयातित वस्तुओं पर से आयात कर हटाया गया।
- कृषि एवं कुटीर उद्योग का विनाश।
- धन के निष्कासन का सिद्धान्त दादा भाई नौरोजी ने दिया था।

समाजिक कारण

- प्रजातीय भेदभाव की नीति।
- सरकारी सेवाओं में पक्षपातपूर्ण नीति।

धार्मिक कारण

- समाजिक एवं धार्मिक सुधार आन्दोलन।
- ब्रह्म समाज – 1828– राजाराम मोहन राय।
- आर्य समाज –1875– स्वामी दयानन्द सरस्वती (वेदों की ओर लौटो)।
- 1856 – ईश्वरचन्द्र विद्यासागर द्वारा विधवा पुर्नविवाह हेतु प्रयास।
- सर विलियम जोंस के एशियाटिक सोसाईटी (1784) द्वारा धर्म ग्रथों का अनुवाद।
- प्रथम विश्वयुद्ध के कारण और परिणाम का भारत से अंतःसम्बन्ध।

प्रथम विश्व युद्ध

मित्र राष्ट्र – फ्रांस, ब्रिटेन, रूस

केन्द्रीय शक्ति – जर्मनी, इटली, आस्ट्रिया, हँगरी

कारण से अंर्तसम्बन्ध

- युद्ध के बाद भारत में अंग्रेजों द्वारा जिम्मेवार सरकार का आश्वासन।
- रक्षा व्यय एवं महँगाई में वृद्धि।
- 1915–17 के बीच एनी बेसेंट एवं बाल गंगाधर तिलक द्वारा होमरूल लीग आन्दोलन
- देश विदेश में क्रान्तिकारी आन्दोलन (1913 में लाला हरदयाल द्वारा गदर पार्टी की स्थापना)
- लाल बाल पाल –लाला लाजपत राय,बालगंगाधर तिलक, विपिन चन्द्र पाल
- 1916 का लखनउ अधिवेशन–काँग्रेस के गरम एवं नरम दल का एकीकरण।
- अध्यक्ष–अम्बिका चरण मजुमदार, काँग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच समझौता।
- भारतीय राजनीति में महात्मा गाँधी का उत्कर्ष।
- गाँधी जी के राजनीतिक गुरू गोपाल कृष्ण गोखले।

परिणाम के साथ अंर्तसम्बन्ध

- मंहगाई अपने चरम पर।
- मजदूर, दस्तकार एवं किसान प्रभावित।
- आयात रूक गया फलतः भारतीय उद्योग फले–फूले एवं उद्योगपति वर्ग का जन्म।
- राष्ट्रवादी भावना के प्रवाह के बावजूद उपनिवेशों पर कठोर नियत्रण का प्रयास।
- 1919का मांटेग्यु चेम्सफोर्ड सुधार द्वारा प्रांतीय परिषद में सदस्यों की संख्या में वृद्धि।
- प्रथम विश्व युद्ध से उत्पन्न परिस्थितियों ने भारत में गाँधीवादी आन्दोलन के लिए पृष्ठभूमि का निर्माण किया।

राष्ट्रीय आन्दोलन के चरण

<table>
<tr><td rowspan="2">प्रथम चरण
1885–1905</td><td rowspan="2">द्वितीय चरण
1905–1919</td><td>तृतीय चरण
1919–1947</td></tr>
<tr><td>असहयोग आन्दोलन
(1920–22)
सविनय अवज्ञा आन्दोलन
(1930–1934)
भारत छोड़ो आन्दोलन
(1942)</td></tr>
</table>

असहयोग आन्दोलन (1920)

- सितम्बर 1920 के कलकत्ता अधिवेशन में असहयोग आन्दोलन चलाने का निर्णय 1 दिसम्बर 1920 के नागपुर अधिवेशन में पुष्टि तथा स्वशासन की जगह स्वराज्य का लक्ष्य।
- प्रथम जन आन्दोलन क्योंकि व्यापक स्तर पर अधिकांश वर्गों की भागीदारी।

कारण

रॉलेट एक्ट (1919)

- बिना मुकदमा चलाए जेल में बंद किया जा सकता था।
- काला कानून।
- कोई अपील नहीं, कोई दलील नहीं कोई वकील नहीं।
- रॉलेट एक्ट के खिलाफ प्रदर्शन के दौरान अमृतसर में डॉ0 सत्यपाल एवं सैफुद्दीन किचलु की गिरफ्तारी।

जालियाँवाला बाग हत्याकांड (13 अप्रैल 1919)

- गिरफ्तारी के विरोध में पंजाब में अमृतसर के जालियाँवाला बाग में 13 अप्रैल 1919 को शांतिपूर्ण सभा पर जनरल डायर के आदेश से गोली चलाई गई जिससे सैकड़ों लोग मारे गए।
- रविन्द्र नाथ टैगोर ने नाईट एवं गाँधी जी ने कैसर–ए–हिंद की उपाधि त्याग दी।
- जालियाँवाला बाग हत्याकांड की जाँच के लिए हंटर समिति का गठन हुआ था।

खिलाफत का मुद्दा

- तुर्की के खलीफा को पुर्नस्थापित करने हेतु भारतीयों द्वारा 1919 में अंग्रेजों के खिलाफ किया गया आन्दोलन।

- 17 अक्टूबर 1919 को खिलाफत दिवस।
- अखिल भारतीय खिलाफत आन्दोलन के अध्यक्ष– महात्मा गाँधी।

कार्यक्रम

विध्वंसात्मक कार्य

- उपाधि एवं अवैतनिक पदों का त्याग।
- सरकारी एवं गैरसरकारी समारोहों का बहिष्कार।
- सरकारी स्कूल कॉलेज का बहिष्कार।
- विदेशी निर्मित वस्तुओं का बहिष्कार।
- विधान परिषद चुनाव का बहिष्कार।

रचनात्मक कार्य

- न्यायिक कार्य पंचों द्वारा
- राष्ट्रीय विद्यालय एवं महाविद्यालय की स्थापना।
- स्वदेशी वस्तुओं को अपनाना।
- चरखा एवं खादी को लोकप्रिय बनाना।
- तिलक स्वराज्य कोष की स्थापना।

उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के चौरी–चौरा में 5 फरवरी 1922 को भीड़ द्वारा 22 पुलिसकर्मियों को जलाया जाना। तत्पश्चात् 12 फरवरी को बारदोली में बैठक कर गाँधी जी ने आन्दोलन स्थगित किया।

परिणाम

- खिलाफत के मुद्दे का अंत।
- हिन्दू–मुस्लिम एकता प्रभावित।
- स्वराज्य का लक्ष्य अपूर्ण।
- काँग्रेस का मजबूत संगठनात्मक ढांचा का निर्माण।
- अंग्रेजी सत्ता की नींव हिली।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन (1930) –दूसरा जन आन्दोलन

कारण

साइमन कमीशन

- भारत में संवैधानिक सुधार पर विचारार्थ नवम्बर 1927 में गठित।
- 7 सदस्यीय श्वेत कमीशन जिसमें एक भी भारतीय नहीं थे।
- 3 फरवरी 1928 को बम्बई में पहुँचने के साथ ही विरोध प्रदर्शन शुरू ।

नेहरू रिपोर्ट

- फरवरी 1928 में मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में दिल्ली में सर्वदलीय सम्मेलन जिसने बिरकेनहेड के संविधान निर्माण की चुनौती को स्वीकार का डोमिनियन स्टेट की दर्जा की मांग की।
- 1929–30 की विश्वव्यापी आर्थिक मंदी ने सरकार के खिलाफ वातावरण का निर्माण ।

पूर्ण स्वराज की मांग

- 31 दिसम्बर 1929 को रावी नदी के तट पर लाहौर में जवाहर लाल नेहरू ने तिरंगा झंडा फहराया और स्वतत्रंता की घोषणा का प्रस्ताव पढ़ा।
- 26 जनवरी 1930 को पूर्ण स्वतंत्रता मनाने की घोषणा।

गाँधी का समझौतावादी रूख

आन्दोलन प्रारंभ करने से पूर्व गाँधी जी ने वायसराय इरविन के सामने 11 सूत्री मांग रखा परन्तु उसने इंकार किया और दमनचक्र तेज कर दिया।

दांडी यात्रा

गाँधीजी 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से अपने 78 अनुयायियों के साथ 6 अप्रैल 1930 को दांडी पहुँच कर नमक कानून को तोड़कर आन्दोलन की शुरूआत की।

कार्यक्रम

- हर स्थान पर नमक कानून का प्रतीकात्मक विरोध।
- स्थानीय स्तर पर सरकारी कर का विरोध यथा– बिहार में चौकीदारी कर।
- महिलाएँ शराब की दूकान के आगे धरना देंगी।
- खादी एवं चरखा का उपयोग।

प्रसार

- पेशावर में सीमांत गाँधी खान अब्दुल गफ्फार खान द्वारा खुदाई खिदमतगार संगठन की स्थापना जिसे लाल कुर्त्ती भी कहा जाता है।

गाँधी इरविन पैक्ट

- सविनय अवज्ञा आन्दोलन की व्यापकता ने वायसराय इरविन को समझौता के लिए बाध्य किया।
- 5 मार्च, 1931 को गाँधी इरविन पैक्ट जिसे दिल्ली समझौता कहा जाता है।
- आन्दोलन स्थगित एवं गाँधी जी द्वितीय गोलमेज सम्मेलन (लंदन) में भाग लेने पर सहमत परन्तु निराश लौटे।
- इरविन राजनैतिक बंदियों की रिहाई पर सहमत हुए ।

परिणाम

- सामाजिक आधार का विस्तार।
- आर्थिक बहिष्कार से आयात पर प्रतिकूल प्रभाव फलतः भारतीय उद्योगों को लाभ।
- 1935 में भारत शासन अधिनियम पारित हुआ।

किसान आन्दोलन

चंपारण सत्याग्रह

- चंपारण के किसान अंग्रेजों के तीनकठिया पद्धति से पीड़ित थे जिसमें किसानों को अपनी भूमि के 3/20 हिस्से पर नील की खेती अनिवार्य।
- 1917 में गाँधी जी के चंपारण सत्याग्रह के परिणामस्वरूप तीनकठिया पद्धति समाप्त।

खेड़ा आन्दोलन

गुजरात के खेड़ा जिले में लगान वृद्धि के खिलाफ 22 जून 1918 को गाँधी जी का सत्याग्रह।

मोपला विद्रोह

1917 में केरल के मालावार तट पर किसानों का विद्रोह जिसके नेता अली मुसालियार थे।

वारदोली सत्याग्रह

फरवरी 1928 में गुजरात के वारदोली में लगान वृद्धि के खिलाफ बल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में वारदोली सत्याग्रह जिसमें उन्हें सरदार की उपाधि मिली।

किसान सभा

- 1922–23 में शाह मुहम्मद जुबैर ने मुंगेर में किसान सभा की स्थापना की।
- स्वामी सहजानन्द सरस्वती द्वारा बिहटा और सोनपुर में 1929 में किसान सभा की स्थापना।
- 11 अप्रैल 1936 को लखनउ में अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना हुई जिसके प्रथम अध्यक्ष स्वामी सहजानन्द सरस्वती थे।

मजदूर आन्दोलन

- 1917 में अहमदाबाद मिल मजदूर के प्लेग बोनस की कटौती के खिलाफ गाँधीजी के नेतृत्व में आन्दोलन हुआ फलतः बोनस बहाल किया गया। राशि 35% निर्धारित।
- 31 अक्टूबर 1920 को काँग्रेस द्वारा अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन काँग्रेस (एटक) की स्थापना, जिसके अध्यक्ष लाला लाजपत राय थे।
- मार्च 1929 में वामपंथी नेताओं के विरूद्ध मेरठ षडयंत्र के नाम पर देशद्रोह का मुकदमा चलाया गया ।

जनजातीय आन्दोलन

- आंध्र प्रदेश में 1916 में रंपा विद्रोह जिसके नेता अल्लूरी सीताराम राजू थे।
- उड़ीसा में 1914 में खोंड विद्रोह हुआ।
- 1914–1920 तक छोटानागपुर के उराँव जनजातियों का अहिंसक आन्दोलन (ताना भगत आन्दोलन) जिसके नेता जतरा भगत थे।

विभिन्न दल

भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस

- मद्रास महाजन सभा – 1884
- इंडियन एसोसिएशन – 1876
- 28 दिसम्बर 1885 को बम्बई के सर गोकुल दास तेजपाल संस्कृत महाविद्यालय में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना जिसके प्रथम अध्यक्ष व्योमेश चन्द्र बनर्जी थे।
- 1907 के सुरत अधिवेशन में काँग्रेस का विभाजन नरम एवं गरम दल में। अध्यक्ष रास बिहारी घोष थे।

कम्युनिष्ट पार्टी

- 1920 में मानवेन्द्र नाथ राय ने ताशकन्द में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की।
- दिसम्बर 1925 में सत्यभक्त ने कानपुर में भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी की स्थापना की।
- 1929 में एन0एम0 जोशी द्वारा ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन फेडरेशन (AITUF) की स्थापना।
- अक्टूबर 1934 में बम्बई में काँग्रेस समाजवादी दल की स्थापना, जिसके नेता जय प्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया, अच्यूत पटवर्द्धन, नरेन्द्र देव थे।
- वामपंथ का प्रसार मजदूर संघ एवं किसानों के बीच बढ़ रहा था।

मुस्लिम लीग

- फूट डालो और राज करो की नीति के तहत अंग्रेजों ने मुसलमानों से एक अलग संगठन बनाने की बात की।
- अक्टूबर 1906 में मोहसिन उल मुल्क ने आगा खाँ के नेतृत्व में वायसराय मिंटो से मुलाकात की। अतः 30 दिसम्बर 1906 को ढाका में ऑल इंडिया मुस्लिम लीग की नींव रखी गई।
- मुस्लिम लीग की मांगों के आधार पर 1909 के मार्ले मिंटो सुधार में साम्प्रदायिकता का बीज बोया गया और अंततः भारत का विभाजन हुआ।

स्वराज पार्टी

- 1922 के गया अधिवेशन में स्वराज पार्टी की स्थापना की घोषणा।
- मार्च 1923 में स्वराज पार्टी का प्रथम सम्मेलन इलाहाबाद में।
- नेता–चितरंजन दास, मोती लाल नेहरू।
- स्थापना का कारण–निर्वाचन में भाग लेकर सरकार के कामकाज में अवरोध पैदा करना।

उद्देश्य

- 1919 के सुधार अधिनियम में सुधार।
- कौंसिल में प्रवेश कर सरकार की गलत नीतियों का पर्दाफाश कर जनमत तैयार करना।
- ब्रिटिश दमनकारी नीतियों का विरोध करना।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आर0एस0एस0)

- मुख्य अवधारणा– हिन्दू–हिन्दूत्व, हिन्दू राष्ट्र।
- 1925 में के0बी0 हेडगेवार ने नागपुर में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना की।

उद्देश्य :

हिन्दू नवयुवकों में अनुशासित एवं चारित्रिक भावना का विकास कर राष्ट्र निर्माण करना।

अन्य विस्मरणी तथ्य :

- ✓ वर्ष 1915 में हरिद्वार में मदन मोहन मालवीय ने हिन्दू महासभा की स्थापना की।
- ✓ गाँधीजी 1893 में दक्षिण अफ्रीका गए एवं 1915 में भारत लौटे।
- ✓ गुजरात के साबरमती आश्रम की स्थापना 1915 में गाँधी जी ने किया।
- ✓ वर्ष 1930 में चटगाँव छापामार दल का नेतृत्व सूर्यसेन ने किया था जिनका उपनाम मास्टर दा था। रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1897 में स्वामी विवेकानन्द ने किया।
- ✓ करो या मरो – महात्मा गाँधी।
- ✓ जय हिन्द, दिल्ली चलो – सुभाषचन्द्र बोस।

- ✓ सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है – राम प्रसाद विस्मिल।
- ✓ अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ब्रिटेन विश्व का पहला देश बना, जहाँ कृषि एवं उद्योग क्षेत्र में मशीनीकरण प्रारंभ हुआ और औद्योगीकरण के एक नये सुग का सूत्रपात हुआ।

◆◆◆

अध्याय–5

अर्थ–व्यवस्था और आजीविका

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ब्रिटेन विश्व का पहला देश बना, जहाँ कृषि एवं उद्योग क्षेत्र में मशीनीकरण प्रारंभ हुआ और औद्योगीकरण के एक नये युग का सूत्रपात हुआ।

औद्योगीकरण

औद्योगीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें वस्तुओं का उत्पादन मानव श्रम द्वारा न होकर मशीनों द्वारा कारखानों में किया जाता है। उत्पादन वृहद् पैमाने पर होता है और उत्पादित वस्तुओं की खपत के लिए बड़े बाजार की आवश्यकता होती है। इसकी सर्वप्रथम शुरूआत इंग्लैंड से हुई और धीरे–धीरे विश्व के अन्य देशों में फैलने लगी।

औद्योगीकरण के कारण

- नये–नये मशीनों का आविष्कार
- कोयले एवं लोहे की प्रचुरता
- फैक्ट्री प्रणाली की शुरूआत
- सस्ते श्रम की उपलब्धता
- यातायात की सुविधा
- विशाल औपनिवेशक स्थिति
- अधिशेष कृषि उत्पादन

फैक्ट्री प्रणाली (कारखाना पद्धति)

- इस प्रणाली के अन्तर्गत वृहद पैमाने पर वस्तुओं का उत्पादन मशीनों द्वारा कारखानों में होता है।
- नये–नये मशीनों का आविष्कार, पूँजी निवेश, सस्ते श्रम की उपलब्धता फैक्ट्री प्रणाली के विकास का मुख्य कारण थे।

उपनिवेशवाद

आर्थिक हितों की प्राप्ति के लिए राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आधिपत्य स्थापित करने की प्रक्रिया उपनिवेशवाद है। औद्योगीकरण के फलस्वरूप उत्पादित वस्तुओं को बेचने के लिए बाजार की आवश्यकता थी। साथ ही वस्तुओं को तैयार करने के लिए कच्चे माल की आवश्यकता थी। इन दोनों ही अवस्थाओं ने यूरोप के लोगों को अपने देशों से बाहर की दुनिया में पैर फैलाने पर मजबूर कर दिया । इस प्रकार औद्योगीकरण ने उपनिवेशवादी प्रवृति को बढ़ावा दिया ।

ब्रिटेन में कोयले एवं लोहे के खानों की प्रचुरता थी। चूँकि मशीनों का निर्माण के लिए लोहे, एवं मशीनों को संचालित करने के लिए कोयला आधारित वाष्प शक्ति का आवश्यकता थी। यही कारण है कि कोयला एवं लौह उद्योग ने औद्योगीकरण को गति प्रदान की ।

- **1769 ई0** में **जेम्स वाट** ने **वाष्प इंजन** का आविष्कार किया।
- **1769 ई0** में वाल्टन निवासी **रिचर्ड आक्रराईट** ने सूत काटने की **स्पिंनीग फ्रेम** नामक मशीन का निर्माण किया।
- **1770 ई0** में स्टेडहील निवासी **जेम्स हारग्रीब्ज** ने सूत काटने की मशीन **स्पिंनीग फ्रेम जेनी** बनाई ।
- **1773 ई0** में लंकाशायर के **जॉन के** ने **फ्लाइंग शटल** का आविष्कार किया।
- **1785 ई0 में एडमंड कार्टराइट ने** वाष्प से चलने वाला **पावरलूम** बनाया।
- **1815 ई0 में हम्फी डेवी** ने खानों में काम करने के लिए **सेफ्टी लैम्प** का आविष्कार किया।
- **1815ई0 में हेनरी बेसेमर** ने शक्तिशाली **भट्टी** को विकसित किया।
- ब्रिटेन में लंकाशायर एवं मैनचेस्टर सूती वस्त्र उद्योग का बड़ा केन्द्र था।
- **बाड़ाबंदी प्रथा**'–अठारहवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में बाड़ाबंदी प्रथा की शुरूआत हुई, जिसमें जमींदारों ने छोटो–छोटे खेतों को खरीद कर बड़े–बड़े कृषि फॉर्म में परिवर्तित किया एवं उसकी घेराबंदी की।
- 1813 में ब्रिटिश संसद ने चार्टर एक्ट पारित किया, जिसके तहत ईस्ट इंडिया कम्पनी का व्यापारिक एकाधिकार समाप्त कर दिया गया और स्वतंत्र व्यापार की नीति का मार्ग प्रशस्त किया गया।

औद्योगीकरण के परिणाम

- नगरों का विकास
- कुटीर उद्योग का पतन
- साम्राज्यवाद का विकास
- समाज में वर्ग विभाजन एवं बुर्जुआ वर्ग का उदय
- फैक्ट्री मजदूर वर्ग का जन्म
- स्लम पद्धति की शुरूआत
- **साम्राज्यवाद :–** सैन्य एवं अन्य तरीके से विदेशी भू–भाग के प्रदेशों को अपने अधीन कर अपना राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित करना **साम्राज्यवाद** कहलाता है।

औद्योगीकरण के फलस्वरूप बड़े पैमाने पर वस्तुओं का उत्पादन प्रारंभ हुआ, जिसकी खपत के लिए यूरोप में उपनिवेश स्थापना की होड़ शुरू हो गई और आगे चलकर इस उपनिवेशवाद ने साम्राज्यवाद

का रूप ले लिया। उपनिवेशवाद में जहाँ आर्थिक नियंत्रण स्थापित किया जाता है वहीं साम्राज्यवाद में आर्थिक और राजनैतिक दोनों तरह के नियंत्रण स्थापित होते हैं ।

बुर्जुवा वर्ग

औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप मध्यमवर्गीय बुर्जुआ वर्ग की उत्पत्ति हुई । यह वर्ग आधुनिक शिक्षा प्राप्त था, जिसने आगे चलकर देश के राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्लम पद्धति

औद्योगीकरण के फलस्वरूप औद्योगिक मजदूर वर्ग का उदय हुआ। ये मजदूर शहर में छोटे–छोटे घरों में निवास करने के लिए बाध्य थे, जहाँ कोई बुनियादी सुविधा उपलब्ध नहीं थी।

भारत में फैक्ट्रियों की स्थापना

- भारत में सर्वप्रथम सूती कपड़े की मिल की नींव 1851ई0 में बम्बई में डाली गयी।
- 1917 ई0 में कलकत्ता में देश की पहली जूट मिल हुकुम चंद ने स्थापित किया।
- 1907 ई0 में जमशेदजी टाटा ने झारखंड के साकची नामक स्थान पर टाटा आयरन एण्ड स्टील कंपनी (TISCO) स्थापना की।
- 1910 ई0 में इन्होंने टाटा हाइड्रो–इलेक्ट्रिक पावर स्टेशन की स्थापना की।
- भारत में कोयला उद्योग का प्रारंभ 1814 ई0 को हुआ।
- 1916 ई0 में ब्रिटिश सरकार ने एक औद्योगिक आयोग नियुक्त किया ताकि भारतीय उद्योग तथा व्यापार के विकास हेतु वित्त से संबंधित प्रयत्नों के लिए उन क्षेत्रों का पता लगाना जिसे सरकार सहायता दे सके।
- 1921 ई0 में सरकार ने राजस्व आयोग नियुक्त किया और इब्राहिम रहीमतुल्ला को आयोग का प्रधान बनाया गया।
- भारत में 1895 में पंजाब नेशनल बैंक, 1905में बैंक ऑफ इंडिया, 1907 में इंडियन बैंक, 1911 में सेंट्रल बैंक, 1913 में द बैंक ऑफ मैसूर तथा ज्वाइंट स्टॉक बैंकों की स्थापना हुई।

मजदूरों की आजीविका

- औद्योगीकरण ने नई फैक्ट्री प्रणाली को जन्मदिया, जिससे कुटीर उद्योगों के मालिक मजदूर बन गये। ये मजदूर अपनी आजीविका के लिए बड़े–बड़े उद्योगपतियों से प्राप्त वेतन पर निर्भर हो गए। औद्योगीकरण ने मजदूरों की आजीविका को इस तरह नष्ट कर दिया था कि उनके पास दैनिक उपयोग की वस्तुओं को खरीदने के लिए धन नहीं रह गया था। अतः मजदूरों ने अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए आंदोलन का रूख किया।
- 1832 ई0 में मजदूरों की स्थिति में सुधार कि लिए सुधार अधिनियम पारित किया गया।
- 1938 ई0 में लंदन श्रमिक संघ के नेतृत्व में मजदूरों ने चार्टिस्ट आन्दोलन का प्रारंभ हुआ।
- 1918 ई0 में इंग्लैंड के सभी व्यस्क स्त्री–पुरूष को मताधिकार प्रदान किया गया।

- भारत में 1881 ई0 में पहला फैक्ट्री एक्ट पारित हुआ । इसके तहत 7 वर्ष से कम आयु के बच्चों को कारखानों में काम करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया । 12 वर्ष से कम आयु के बच्चों एवं महिलाओं के काम के घंटे तथा मजदूरी को निश्चित किया गया।
- 31 अक्टूबर 1920 ई0 को अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) की स्थापना की गई, जिसके प्रधान लाला लाजपत राय बनाए गए ।
- 1919 ई0 को अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की स्थापना की गई।
- भारत में 1926 ई0 में मजदूर संघ अधिनियम पारित हुआ, जिसके द्वारा पंजीकृत मजदूर संघों को मान्यता प्रदान की गई।
- 1948 ई0 में न्यूनतम मजदूरी अधिनियम पारित किया गया, जिसके द्वारा उद्योगों में मजदूरी की दरें निश्चित की गई।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात 1962 ई0 में केन्द्र सरकार ने मजदूरों की स्थिति में सुधार हेतु राष्ट्रीय श्रम आयोग का गठन किया गया, जिसके माध्यम से मजदूरों को रोजगार उपलब्ध कराने एवं मजदूरी में सुधार का प्रयास किया गया।

कुटीर उद्योग का महत्व एवं उसकी उपयोगिता

- घरों में काम करनेवाले कारीगर अपने हाथ से अथवा हाथ से चलाये जाने वाले यंत्रों के द्वारा वस्तुओं का उत्पादन करते थे। उत्पादन का यह दौर आदि–औद्योगिकरण (कुटीर उद्योग) के नाम से जाना जाता है।
- कुटीर उद्योग का महत्व और विषेषता है कि यह बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर, कौशल में वृद्धि, उद्यमिता में वृद्धि, उपयुक्त तकनीक का बेहतर प्रयोग, कम पँजी निवेश तथा जनसंख्या का बड़े शहरों में प्रवाह को रोकता है।

  आधुनिक औद्योगिक प्रणाली के विकास के पूर्व भारत का कुटीर उद्योग बहुत ही समृद्ध स्थिति में था। भारतीय मलमल और छींट तथा सूती वस्त्रों की मांग पूरे विश्व में थी, खासकर ब्रिटेन में उच्च वर्ग के लोगों हाथों से बनी हुई वस्तुओं को ज्यादा महत्व देते थे। भारत का कुटीर उद्योग न केवल स्थानीय आवश्यकता की पूर्त्ति के लिए माल उपलब्ध कराते थे, बल्कि वे निर्मित वस्तुओं का निर्यात भी करते थे।
- औद्योगीकरण के फलस्वरूप जहाँ वस्तुओं का उत्पादन कम समय में बड़े पैमाने पर होने लगा, वहीं भारत में कुटीर उद्योग बंद होने के कागार पर पहुँच गया। क्योंकि मशीनों से निर्मित वस्तुओं की तुलना में कुटीर उद्योगों द्वारा निर्मित वस्तुओं के मूल्य अधिक थे। इस अवस्था को **निरूद्योगीकरण** कहते हैं ।
- स्वतंत्रता के पश्चात भारत सरकार ने कुटीर उद्योग की उपयोगिता एवं उसके विकास के लिए 1948, 1956, 1977, 1980 की औद्योगिक नीति में लघु एवं कुटीर उद्योग को प्रोत्साहन दिया गया।

◆◆◆

अध्याय–6

शहरीकरण एवं शहरी–जीवन

शहरीकरण, गाँव का शहर या नगर के रूप में विकसित होने की प्रक्रिया है,जहाँ गैर कृषि–उत्पादन, व्यापार व व्यवसाय आदि आर्थिक क्रियाओं की प्रमुखता होती है।

गाँव → गंज → कस्बा → शहर या नगर → महानगर

गाँव	गाँव की जनसंख्या का एक बड़ा भाग कृषि व्यवसाय से जुड़ा होता है। इनकी आय का प्रमुख स्रोत कृषि संबंधी उत्पाद होते हैं। अतः गाँव की मुख्य विशेषता एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था है, जो मूलतः जीवन निर्वाह अर्थ व्यवस्था पर आधारित है।
गंज (हाट)	एक छोटे से बाजार को गंज कहा जाता है। गंज कपड़ा, फल, सब्जी, दूध एवं अन्य प्रकार के दैनिक उपभोग की वस्तुओं का विक्रय केन्द्र था। गंज विशिष्ट परिवारों तथा सेना के लिए सामग्री उपलब्ध कराते थे।
कस्बा	ग्रामीण अंचल में स्थित एक छोटे शहर को माना जाता है जो अधिकांशतः स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति एवं विशिष्ट व्यक्ति का केन्द्र होता है।
शहर	शहर गैर कृषि–उत्पादन गतिविधियों का केन्द्र था। शहर उद्योग, व्यापार, वाणिज्य व प्रशासनिक इकाई का केन्द्र होता है।
महानगर	किसी प्रांत या देश का विशाल और घनी आबादी वाला शहर जो प्रायः वहाँ की राजधानी भी होता है।

शहरों के उदय के कारण

आधुनिक शहरों के विकास में औद्योगिक पूँजीवाद, उपनिवेशवादी व साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का प्रसार, लोकतांत्रिक आदर्शों का विकास आदि ने निर्णायक भूमिका निभाई ।

शहरीकरण की प्रक्रिया

- ग्रामीण एवं सामंती व्यवस्था की जगह प्रगतिशील शहरी व्यवस्था की ओर बढ़ने की प्रवृत्ति बढ़ी।
- भूमि निवेश, तकनीकी खोज एवं स्थायी कृषि के प्रभाव से संपत्ति का जमाव हुआ। फलस्वरूप श्रम विभाजन ने व्यावसायिक विशिष्टता को जन्म दिया। इन परिवर्त्तनों के आधार पर शहरी जीवन के उद्‌भव को एक आधार प्रदान किया।

- कृषक वर्ग का नगरों की ओर बढ़ना एक गतिशील मुद्रा प्रधान अर्थव्यवस्था के आधार पर संभव हुआ जो प्रतियोगी एवं उद्यमी प्रवृति से प्रेरित था।
- आर्थिक तथा प्रशासनिक संदर्भ में ग्रामीण तथा शहरी व्यवस्था को दो मुख्य आधार है—जनसंख्या का घनत्व एवं कृषि आधारित आर्थिक क्रियाओं का अनुपात। शहरों में जनसंख्या का घनत्व अधिक होता है। शहरों से गाँवों को उनके आर्थिक प्रारूप में कृषिजन्य क्रियाओं के आधार पर अलग किया जाता है।

शहर की विशेषता

शहरी जीवन तथा आधुनिकता एक—दूसरे के पूरक हैं। शहरी क्षेत्र को आधुनिक व्यक्ति का प्रभाव क्षेत्र माना जाता है। शहर व्यक्ति के अनेक आवश्यकताओं की पूर्त्ति करने की असीम संभावनाएँ प्रदान करता है। शिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात, व्यवसाय की स्वतंत्राता आदि सुविधाएँ शहरों में उन्नत अवस्था में होती है।

गाँव एवं शहर में विभिन्नता

ग्रामीण लोगों के जीवन—यापन के मुख्य साधन हैं — कृषि, पशुपालन, घरेलू उद्योग—धंधे। गाँवों की जनसंख्या सीमित होती है। इसके विपरीत शहरों में रहने वाले लोग कृषि—उत्पादक गतिविधियों पर निर्भर होते हैं। उद्योग धंधे, व्यापार व वाणिज्य की प्रमुखता होती है। शहरों की आबादी सघन होती है।

शहरों की समस्या

शहरों के उदय ने निम्न समस्याओं को जन्म दिया।

- बाजारवाद का उदय
- जनसंख्या घनत्व में वृद्धि
- मलिन वस्तियों का उदय
- अपराधिक प्रवृति में वृद्धि
- यातायात की समस्या
- स्वास्थ्यपरक सुविधाओं का अभाव
- प्रदूषण की समस्या

सामाजिक बदलाव और शहरी जीवन

शहरों में नए सामाजिक समूहों का अभ्युदय हुआ। शहरी जीवन विभिन्न वंश, जाति, नस्ल, क्षेत्र, समुदाय, सामाजिक समूहों का प्रतिनिधित्व करता है।

व्यावसायिक व पँजीपति वर्ग	शहरों के उद्भव का एक प्रमुख कारण व्यावसायिक व पँजीपति वर्ग के उदय के साथ संभव हुआ। यह वर्ग शहरों में उत्पादन एवं व्यापारिक गतिविधियों से जुड़े थे। मुनाफा कमाने की प्रवृति के कारण इस वर्ग के पास धन का संचय हुआ। सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर यह विशेषाधिकार प्राप्त अल्पसंख्यक वर्ग था, जो स्वतंत्र उन्मुक्त एवं विलासी जीवन व्यतीत करता था। इनकी समाज

	में काफी प्रतिष्ठा थी। शहरी समाज में यह वर्ग एक नए सामाजिक शक्ति के रूप में उभरकर आए।
मध्यम वर्ग	शहरीकरण की प्रक्रिया ने मध्यम वर्ग को शक्तिशाली बनाया। शहरों में एक शिक्षित मध्यम वर्ग का उदय हुआ, जो बुद्धिजीवी वर्ग के रूप में स्वीकार किए गए। यह वर्ग वेतनभोगी के रूप में विभिन्न पदों पर कार्यरत थे–जैसे: शिक्षक, वकील, चिकित्सक, इंजीनियर, लिपिक आदि। इन्होंने समाज में शोषण और अत्याचार के विरूद्ध अनेक आन्दोलनों का नेतृत्व किया।
श्रमिक वर्ग	आधुनिक शहरों में जहाँ एक ओर पँजीपति वर्ग का उदय हुआ तो दूसरी ओर श्रमिक वर्ग का। शहरों में फैक्ट्री प्रणाली की स्थापना के कारण भूमिहीन कृषक वर्ग बेहतर रोजगार की तलाश में बड़े पैमाने पर शहरों की ओर पलायन किया। यह वर्ग कारखानों में मजदूर के रूप में काम करते थे, जिनका कारखानों के मालिकों द्वारा अत्यधिक शोषण किया जाता था। श्रमिक वर्ग ने अपने हितों की रक्षा के लिए श्रमिक संघों की स्थापना कर आन्दोलन को संचालित किया।

औपनिवेषिक भारतीय शहर : बम्बई

- बम्बई औपनिवेशिक भारत की वाणिज्यिक राजधानी थी। बम्बई भारत का एक प्रमुख बंदरगाह था, जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का एक मुख्य केन्द्र था। यहाँ से कपास और अफीम जैसे वस्तुओं का निर्यात किया जाता था। व्यापारिक केन्द्र होने के कारण यहाँ व्यापारी, महाजन, कारीगर, दूकानदार भी बसे थे।
- 1800 ई0 के आसपास बम्बई फोर्ट–एरिया शहर का एक केन्द्र बिन्दु था, जो दो भागों में बँटा हुआ था । एक भाग में नेटिव (स्थानीय निवासी) रहते थे और दूसरे भाग में यूरोपीय निवास करते थे।
- कपड़ा मिलों के कारण लोग बम्बई में आकर बसने लगे, जिसके कारण बम्बई में आबादी का दबाव बढ़ गया । फलतः लोग घनी आबादी वाले चॉलों (बहुमंजिली इमारत) में रहते थे। व्यावसायिक उद्येश्यों एवं आवासीय जरूरतों को पूरा करने के लिए समुद्री जमीन को विकसित किया जाने लगा ।
- 1784 में 'भूमि विकास परियोजना' लागू की गई।
- 1898 ई0 में 'सिटी ऑफ बॉम्बे इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट' की स्थापना की गई।
- 1918 ई. में बम्बई के मकानों के महंगे किराए को समित करने के लिए किराया कानून पारित किया गया।

पाटलिपुत्र पटना

- पटना शहरीकरण की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करता है। प्राचीन काल में पटना पाटलीपुत्र के नाम से जाना जाता था। प्राचीन काल में यह नगर शिल्पकला, व्यापार, शिक्षा, सांस्कृतिक गतिविधियों का एक प्रमुख केन्द्र था।
- छठी शताब्दी ईसा पूर्व में मगध के शासक आजातशत्रु ने पाटलिपुत्र में एक सैनिक शिविर बनाया था । कालांतर में यह मगध साम्राज्य की राजधानी बना।
- मौर्यकालीन राजप्रसाद के अवशेष दक्षिण पटना में स्थित कुम्हरार से प्राप्त हुए हैं।
- पाटलिपुत्र नगर प्रशासन के अनेक पहलुओं पर चर्चा यूनान निवासी मेगास्थनीज की रचना 'इंडिका' में उपलब्ध है।
- 1666 ई0 में सिखों के दसवें और अंतिम गुरू गोविन्द सिंह जी का जन्म पटना में हुआ था।
- अफगान शासक शेरशाह सूरी के समय यह प्रशासनिक केन्द्र के रूप में विकसित हुआ।
- मुगल शासक अकबर के शासनकाल में पटना एक व्यापारिक केन्द्र के रूप में विख्यात था । अठारहवीं शताब्दी में मुगल राजकुमार अजीमुशान ने इस नगर का नवनिर्माण कराया और इसे अजीमाबाद नाम दिया। ईस्ट इंडिया कंपनी के समय पटना व्यापारिक केन्द्र बना रहा, जहाँ अनेक देशों के व्यापारी सक्रिय थे।

सिंगापुर

- सिंगापुर एक सुनियोजित शहर है, जो विश्व में नगर विकास का आदर्श प्रतिरूप प्रस्तुत करता है। 1965 ई0 में पीपुल्स एक्शन पार्टी के अध्यक्ष ली कुआन येव के नेतृत्व में सिंगापुर को आजादी मिली।
- सिंगापुर के सुनियोजित विकास के लिए आवास एवं विकास कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। आवासीय खंडों में जनस्वास्थ्य को दृष्टिगत रखते हुए हवा निकासी एवं अन्य स्वास्थ्य–परक सुविधाओं की व्यवस्था की गई। सड़कों का निर्माण किया गया एवं परिवहन व्यवस्था को नियंत्रित करने के लिए यातायात नियम बनाए गए। शहरों में लोगों के आने पर नियंत्रण रखा जाने लगा।

पेरिस

- बेरॉन हॉसमान ने पेरिस के पुनर्निमाण का काम किया । शहर में सीधी एवं चौड़ी सड़कें, बुलेवड्र्स (छायादार सड़क) पार्क खुले मैदान का निर्माण किया गया ।
- शहर में शांति व्यवस्था के लिए पुलिस तैनात किए गए । पेरिस ऐसी राजधानी के रूप में जाना जाता है, जो केवल वास्तुकला के लिए नहीं बल्कि सामाजिक और बौद्धिक केन्द्र के रूप में विख्यात है।

व्यावसायिक पँजीवाद

व्यापक स्तर पर व्यवसाय, बड़े पैमाने पर उत्पादन, मुद्रा प्रधान अर्थव्यवस्था, काम के बदले वेतन, मजदूरी का नगद भुगतान, गतिशील एवं प्रतियोगी अर्थव्यवस्था, स्वतंत्र उद्यम, मुनाफा कमाने की प्रवृति, मुद्रा, बैंकिंग, बीमा, अनुबंध कम्पनी साझेदारी, ज्वाइंट स्टॉक, एकाधिकार आदि व्यावसायिक पँजीवादी व्यवस्था की विशेषता रही है।

- 1810 ई0 से 1880 ई0 तक लंदन की आबादी 10 लाख से बढ़कर 40 लाख हो गई।
- विश्व की पहली भूमिगत रेल 10 जनवरी 1863 ई0 में बना। यह रेलवे लाईन लंदन की पैडिंग्ल और केरिंग्टन स्ट्रीट के बीच स्थित है।
- 1870ई0 में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा कानून बना।
- 1902 ई0 में फैक्ट्री कानून के अन्तर्गत बच्चों को कारखानों में काम करने पर प्रतिबंध लगा दिया गया।
- वास्तुकार एवेनेजर हावर्ड लंदन में **गिर्द हरित पट्टी** विकसित की जिसे **गार्डन सिटी** नाम दिया गया।
- शहरों के विस्तार में भव्य परकोटे का निर्माण हुआ।
- लंदन भारी संख्या में प्रवासियों को आकर्षित करने में सफल हुआ।
- विकासशील देशों में नगरों के प्रति रूझान देखा जाता है।
- नगर प्रबंधन के द्वारा निवास तथा आवासीय पद्धति, जनस्वास्थ्य, जन यातायात के साधन इत्यादि के उपाय किये गये।
- ब्रिटेन में मैनचेस्टर, लंकाशायर, शेफील्ड औद्योगिक नगर थे।

◆◆◆

अध्याय–7

व्यापार और भूमंडलीकरण

आधुनिक काल के पूर्व वैश्विक संपर्क

यद्यपि भूमंडलीकरण की अवधारणा पिछले 5 दशकों में विकसित हुई परन्तु इसका उद्भव प्राचीन काल में खोजा जा सकता है। सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंधों ने इसे बढ़ावा दिया। सिंधु घाटी सभ्यता का मेसोपोटामिया से, भारत का रोमन जगत से तथा मध्य और द0पू0 एशियाई देशों से संपर्क बढ़ा। पूर्व मध्यकाल, मध्यकाल, आधुनिक काल में भी व्यापारिक और सांस्कृतिक संपर्क विकसित हुआ। अलेक्जेंड्रिया शहर पहला विश्व बाजार के रूप में उभर कर आया, जिसे सिकन्दर ने स्थापित किया था।

रेशम मार्ग का व्यापार में महत्व

ईसा की आरंभिक सदियों में व्यापार में रेशम मार्ग का महत्व बढ़ा। रेशम मार्ग नाम इस लिए पड़ा कि इसी मार्ग से चीनी रेशम और अन्य महत्वपूर्ण सामानों का व्यापार होता था। इस मार्ग द्वारा स्थल और समुद्री मार्ग से मध्य एशिया, द0पू0 एशिया, यूरोप और अफ्रीका जुड़ गए। पंद्रहवी शताब्दी तक यह एशिया से यूरोप को जोड़ने वाला प्रमुख व्यापारिक मार्ग बना रहा है।

खाद्यान्नों का आदान–प्रदान

आपसी संपर्क से खाद्यान्न एक देश से दूसरे देश में ले जाए गए। 'झटपट तैयार होने वाले खाद्य पदार्थ नूडल्स का मूल स्थान चीन है। पास्ता को अरब यात्री सिसली ले गए। आलू, सोया, मुँगफली, मक्का, टमाटर, मिर्च, शकरकंद यूरोप से भारत आए।

आरंभिक उपनिवेशीकरण और इसका प्रभाव

भौगोलिक खोजों ने उपनिवेशीकरण को बढ़ावा दिया। एशिया और अमेरिका के फसल और खनिज पदार्थों की ओर यूरोपीय व्यापारियों और नाविकों का ध्यान गया। अमेरिका का उपनिवेशीकरण हुआ। इंग्लैंड ने अमेरिका में अपने 13 उपनिवेश स्थापित किए। रोजगार की तलाश में तथा यूरोप में धार्मिक दंड से बचने के लिए बड़ी संख्या में यूरोपीय अमेरिका में बसने लगे।

19वीं शताब्दी की आर्थिक गतिविधियाँ, विश्व बाजार का स्वरूप एवं इसका विस्तार

19वीं सदी की वैश्विक अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषता थी– व्यापार, श्रम तथा पूँजी का प्रवाह। औद्योगिक क्रांति की शरूआत इंग्लैंड से हुई।

विश्व अर्थव्यवस्था का आरंभ, कार्न लॉ और इसका प्रभाव

ब्रिटेन में कृषि उत्पादों के मूल्य में वृद्धि हुई जिससे बड़े कृषक और भू–स्वामी लाभान्वित हुए। ब्रिटेन में खाद्यान्न के आयात को प्रतिबंधित करने के लिए कॉर्न लॉ पारित किया गया। बढ़ते प्रभाव के कारण सरकार को इस कानून को निरस्त करना पड़ा।

कॉर्न लॉ के निरस्तीकरण के प्रभाव

- ब्रिटेन में खाद्यान्न का आयात बढ़ना।
- किसानों का पलायन।
- उपभोग क्षमता में वृद्धि।
- कृषि का विस्तार एवं श्रम का पलायन।
- परिवहन के साधनों एवं पूँजी की व्यवस्था।

व्यापार के विकास में तकनीकी की भूमिका

- माल ढुलाई के लिए परिवहन के साधनों में सुधार।
- माँस के व्यापार में रेफ्रीजेरेटर का व्यवहार।
- इससे बिना क्षति पहुँचाए मॉस यूरोप भेजा गया।,
- मॉस की कीमतें घटीं और इसका उपयोग बढ़ गया।

अफ्रीका और एशिया में उपनिवेशवाद

यूरोपीय शक्तियों ने सैनिक अभियानों और व्यापार द्वारा अफ्रीका का आपसी सैनिक बँटवारा कर वहाँ के आर्थिक संसाधनों पर अधिकार कर लिया तथा उपनिवेश विश्व अर्थव्यवस्था से जुड़ गए।

भारत से श्रम प्रवाह

गिरमिटिया मजदूर बिहार के पश्चिमी क्षेत्र से भेजे जा रहे थे। गिरमिटिया मजदूर (अनुबंधित श्रमिक) असम के चाय बगानों, कैरीबियाई द्वीप समूह, मॉरीशस, फिजी श्रीलंका, मलाया ले जाए गए । होसे मेला, रास्ताफारियनवाद और चटनी म्यूजिक द्वारा भारतीय और विदेशी सांस्कृतिक तत्वों का समागम हुआ ।

वैश्विक भारत में भारतीय पूँजीपति

महाजनों और साहूकारों ने एशिया और अफ्रीका में पूँजी निवेश किया। सिंधी व्यापारियों ने महत्वपूर्ण बंदरगाहों पर एम्पोरियम खोल कर धन कमाया ।

वैश्विक व्यवस्था एवं भारतीय व्यापार

ईस्ट इंडिया कम्पनी के माध्यम से भारत ने वैश्विक व्यवस्था में भाग लिया । कपास, नील, अफीम का निर्यात किया । मैनचेस्टर में बने वस्त्र का, चाय, चीनी, मिट्टी के बर्तनऔर अन्य सामानों का आयात किया गया । इससे कंपनी को आर्थिक लाभ हुआ परन्तु भारत से धन निष्कासन बढ़ गया।

विश्व बाजार की उपयोगिता

इससे लाभ और हानि दोनों हुई। उपभोक्ता वर्ग के हितों की सुरक्षा, व्यापार और उद्योग का विकास–एशिया, अफ्रीका में सम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद का विकास– उपनिवेशों का आर्थिक दोहन।

दो विश्वयुद्धों के बीच विश्व बाजार और अर्थव्यवस्था

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था कमजोर हो गई तथा अमेरिका की संपन्नता बढ़ गई। अमेरिका विश्व का कर्जदाता बन गया था । युद्ध के दौरान मांग, उत्पादन और रोजगार में तेजी आई परन्तु धीरे–धीरे किसानों की स्थिति दयनीय बन गई ।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद अमेरिकी अर्थव्यवस्था

अमेरिकी अर्थव्यवस्था की प्रमुख व्यवस्था थी– वृहत उत्पादन। इसका आरंभ कार निर्माण के लिए हेनरी फोर्ड ने किया।

अमेरिकी अर्थव्यवस्था के लाभ

- इंजीनियरिंग सामानों की लागत और मूल्य में कमी आई।
- वेतन बढ़ने से मजदूरों की स्थिति में सुधार आया।
- उपभोक्ता वस्तुओं की मांग में वृद्धि हुई एवं उत्पादन की गति लगातार बढ़ती गई।
- उपभोक्ता वस्तुओं,घरों को खरीदने क लिए हायर परचेज की व्यवस्था की गई जिससे अमेरिका की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हुई।

महामंदी

1929–30 में आर्थिक महामंदी आई। इसके कारण नाजीवादी–फासीवादी शासन का उदय हुआ ।

कारण	प्रभाव	
	भारत पर प्रभाव	विश्व पर प्रभाव
• कृषि में अति उत्पादन • अमेरिकी पूँजी के प्रवाह में कमी • उपभोक्ता की कमी	• व्यापार में गिरावट • कृषि उत्पादन के मूल्य में कमी • बंगाल का पटसन उद्योग नष्ट • भारत में सोने का निर्यात बढ़ गया	• बैंकिंग व्यवस्था नष्ट प्राय • निर्धनता और बेरोजगारी • ब्रिटेन और जर्मनी सबसे अधिक प्रभावित।

युद्धोत्तर विश्व बाजार एवं बदलते अंतराष्ट्रीय संबंध

(i) 1920–29 आर्थिक सम्पन्नता का काल

(ii) 1929–1945 में आर्थिक मंदी एवं इसके प्रभावों से मुक्त होने का प्रयास–अमेरिका में रूजवेल्ट की न्यू डील ।

युद्धोत्तर अंतराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था

दो मुख्य तत्व

- आर्थिक स्थिरता बनाए रखने के लिए सरकारी हस्तक्षेप जरूरी
- अंतराष्ट्रीय आर्थिक संबंधों को सुनिश्चित करने में सरकारी भूमिका पर बल
- 1944 में ब्रेटन वुड्स में संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमें 2 संस्थान आए

अंतराष्ट्रीय मुद्राकोष (IMF) एवं विश्व बैंक (स्थापना 1944 में)

उद्देश्य

- राष्ट्रीय मुद्राओं की विनिमय दर निर्धारित करना।
- विकसित देशों को कर्ज उपलब्ध करना।

1950 के दशक के बाद परिवर्तन : 1945–60 के दशक के बीच अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संबंधः–

साम्यवादी एवं पूँजीवादी विकास– पश्चिमी यूरोप में आर्थिक विकास एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्ध– एशिया और अफ्रीका में नव स्वतंत्र विकासशील राष्ट्रों की आर्थिक नीति।

भूमंडलीकरण

- विश्व के सभी राष्ट्र आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक रूप से एक दूसरे से जुड़ गए ।
- 1991 के बाद भूमंडलीकरण का तेजी से प्रसार।
- अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं तथा क्षेत्रीय संघों, बहु राष्ट्रीय कंपनियों का इस प्रसार में योगदान।

वर्तमान जीविकोपार्जन और भूमंडलीकरण के बीच अन्तर्साम्य

- सेवा क्षेत्र– बैंक, बीमा, पर्यटन, सूचना और संचार के माध्यमों का विकास।
- बेरोजगारी की समस्या का समाधान।
- अमेरिकी आर्थिक साम्राज्यवाद का उदय और विकास।

◆◆◆

अध्याय–8

अध्याय–8

प्रेस संस्कृति एवं राष्ट्रवाद

छापाखाना के आविष्कार का महत्व इस युग में आग,पहिया और लिपि की तरह है। इसके विकास कई चरणों में हुए।

प्रथम चरण : आरंभ से गुटेनबर्ग तक।

द्वितीय चरण : गुटेनबर्ग द्वारा प्रिंटिंग प्रेस का विकास।

तृतीय चरण : गुटेनबर्ग के बाद का तकनीकी विकास।

प्रथम चरण की विशेषताएँ

- 105 AD में टसूप्लाइलून (चीनी नागरिक) ने कागज बनाया।
- मुद्रण की पहली तकनीक चीन,जापान और कोरिया में विकसित हुई।
- 10वीं सदी के पूर्वाद्ध तक ब्लॉक प्रिंटिंग द्वारा मुद्रा–पत्र छापे गए।
- 1041 ई0 में चीनी व्यक्ति पि–शेंग ने मिट्टी की मुद्रा बनाई।
- शंघाई प्रिंट संस्कृति का केन्द्र बना, सिविल सेवा के आकांक्षी छात्रों को पुस्तक की छपाई से अध्ययन में मदद मिली।
- अध्येता के रूप में विद्वान, व्यापारी एवं सम्पन्न वर्ग सामने आया।

द्वितीय चरण की विशेषताएँ

- रेशम मार्ग से ब्लॉक प्रिंटिंग के नमूने ईसाई मिशनरी एवं मार्कोपोलो द्वारा रोम पहुँचा।
- रोमन लिपि में अक्षरों की संख्या चीनी लिपि से कम होने के कारण छपाई संस्कृति का तेजी से विकास।
- कागज बनाने की कला 11वीं सदी में यूरोप पहुँची तथा 1336 में प्रथम पेपर मिल की स्थापना जर्मनी में हुई।
- बिखरी हुई मुद्रण कला को जर्मनी के स्ट्रेसवर्ग शहर के गुटेनवर्ग ने एकत्रित कर पंच, मेट्रिक्स मोल्ड को योजनाबद्ध तरीके से बनाया।
- सीसा रांगा और स्याही का उपयोग शुरू।
- कम्पोज टाईप मैटर का मुद्रण शोध 1440 में शुरू।
- 42 लाइन एवं 36 लाइन (1448) के बाइबिल की छपाई गुटेनबर्ग के द्वारा।
- सुओफर ने इण्डलजेंस की छपाई की।
- बेसल्स, रोम, वेनिस, एण्टवर्प एवं पेरिस मुद्रण के प्रमुख केन्द्र पुनर्जागरण के भी केन्द्र बने।

तृतीय चरण की विशेषताएँ

- 1475 में इंग्लैंड में मुद्रण कला की शुरूआत।
- पुर्तगाल में 1544 ई0 में तथा पुर्तगालियों द्वारा ही 16वीं सदी में भारत में मुद्रण की शुरूआत।
- अब प्रेस धातु के बनने लगे (18वीं सदी से)
- एम0हो0 ने शक्तिचालित वेलनाकार प्रेस बनाया।
- 18वीं सदी के अन्त तक ऑफसेट प्रेस द्वारा 6 रंगों में छपाई ।
- 20वीं सदी में पेपर रील और फोटो विद्युतीय नियत्रण कार्य शुरू।

भारतीय समाचार पत्र

<table>
<tr><td>अंग्रेजों द्वारा प्रकाशित / ऐंग्लो इंडियन प्रेस</td><td>विशेषता
1. फूट डालो एवं शासन करो की नीति का प्रचार प्रसार
2. सरकारी खबरें एवं विज्ञापन छापना
3. भाषा–अंग्रेजी एवं संपादन कार्य कंपनी के अधिकारियों द्वारा

अंग्रेजी समाचार–पत्र
बंगाल गजट एवं इंडिया गजट– जे0के0 हिक्की (1780)
कलकत्ता कैरियर, एशियाई मिरर
ओरियंटल स्टार, बंबई गजट, हैराल्ड, मद्रास गजट
इनका क्षेत्र कंपनी के अधिकारियों–व्यापारियों तक सीमित</td></tr>
<tr><td>भारतीय समाचार–पत्र एवं उनकी विशेषता</td><td>समाचार पत्र
बंगाल गजट — गंगाधर भट्टाचार्य — (1816)
संवाद कौमुदी — राजाराम मोहन राय — (1821)
मिरातुल अखवार — राजाराम मोहन राय — (1822)
बंगदत — (1830)
जामे जमशेद — दादाभाई नौरोजी — (1831)
रस्त–ए–गोफ्तार — अखबारे सौदागर — (1851)

नेताओं द्वारा निकाले जाने वाले समाचा–पत्र
हिन्दु पैट्रियट — ईश्वर चंद्र विद्यासागर
सोम प्रकाश — ईश्वर चंद्र विद्यासागर — (1858)
इंडियन मिरर — सुरेन्द्र नाथ टैगोर, मनमोहन घोंष
सुलभ समाचार — केशव चन्द्र सेन
अमृत बाजार पत्रिका — मोतीलाल घोष — (1868)
बंगवासी — जोगेन्द्र नाथ बोस — (1881)</td></tr>
</table>

	हिन्दूस्तान रिब्यू — सच्चिदानन्द सिन्हा बम्बे क्रॉनिकल — फिरोज साह मेहता युगान्तर, बन्देमातरम — अरविन्द घोष एवं वारीन्द्र घोष यंग इंडिया, हरिजन — गाँधीजी अलहिलाल — मौलाना आजाद कामरेड हमदर्द — मोहम्मद अली ।
विशेषता	1. राष्ट्रवादी विचारों का प्रचार–प्रसार 2. अंग्रेजी शासन की आलोचना 3. सामाजिक धार्मिक समन्वय स्थापित करना 4. सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार 5. भाषा– अंग्रेजी एवं भारतीय भाषा संपादन कार्य– समाज सुधारकों एवं राष्ट्रवादी नेताओं द्वारा।

भारतीय प्रेस की राष्ट्रीय आन्दोलन में भूमिका

1. साम्राज्यवादी शोषण का विरोध।
2. राष्ट्रीय चेतना का प्रचार–प्रसार।
3. सामाजिक–धार्मिक आन्दोलन को बढ़ावा।
4. लोकमत का प्रतिनिधित्व।
5. नई शिक्षा नीति के प्रति असंतोष को उजागर करना।
6. विदेश नीति के प्रति आलोचनात्मक एवं समीक्षात्मक दृष्टिकोण।
7. धार्मिक सद्भाव एवं समन्वय स्थापित करना।

प्रेस के विरूद्ध प्रतिबंध

- 1799 का समाचार पत्रों का पत्रेक्षण (सेंसर) अधिनियम – लार्ड वेलेजली।
- 1823 के अनुज्ञप्ति नियम – जॉन एडमस।
- भारतीय समाचार–पत्रों की स्वतंत्रता अधिनियम 1835 – विलियम बेंटिक।
- 1857 का अनुज्ञप्ति अधिनियम।
- देशी समाचार–पत्र अधिनियम (वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट) – 1878– लार्ड लिटन।
- 1908 का भारतीय समाचार पत्र अधिनियम।
- 1910 का भारतीय समाचार पत्र अधिनियम।
- 1931 का भारतीय समाचार पत्र अधिनियम (संकटकालीन शक्तियाँ)।
- समाचार पत्र जाँच समिति– 1947।
- 1951 का समाचार पत्र आपत्तिजनक विषय अधिनियम।

स्वतंत्र भारत में प्रेस की भूमिका

- साहित्य एवं समाज में चेतना जागृत करना।
- भाषा शास्त्र के विकास में योगदान।
- समाज में नवचेतना, मानवतावाद, तर्कवाद का विकास।
- सामाजिक बुराईयों एवं अंधविश्वासों का विरोध।
- स्वस्थ मनोविनोद का प्रयास।
- दिन प्रतिदिन की उपलब्धियों एवं सूचनाओं का प्रसारण।
- चौथे स्तंभ के रूप में लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा का दायित्व निभाना।

◆◆◆